श्री शिवजी की आरती

ओम जय शिव ओंकारा स्वामी जय शिव ओंकारा ।
ब्रम्हा विष्णु सदा शिव अर्धांङगी गौरां ॥ ॐ हर-३ महादेव ॥ टेक ॥

एकानन चतुरानन पंचानन राजे । स्वामीo ।
हंसानन, गरुड़सन, वृषवाहन साजे ॥ ॐ हर-३ महादेव ॥

दो भुज चार चतुर्भुज, दसभुज ते सोहे । स्वामीo ।
तिनहू रूप निखरता, त्रिभुवन जन मोहे ॥ ॐ हर-३ महादेव ॥

अक्षमाला वनमाला रुण्डमाला धारी । स्वामीo ।
चन्दन मृगमद लेपन, भोले शुभकारी ॥ ॐ हर-३ महादेव ॥

करके बीज कमण्डल, चक्र त्रिशूल धरता । स्वामीo ।
जगकर्ता जगहर्ता जगपालन करता ॥ ॐ हर-३ महादेव ॥

लक्ष्मी और सावित्री, पार्वती संगे । स्वामीo ।
अर्धांङगी गायत्री, शिव गौरा संगे ॥ ॐ हर-३ महादेव ॥

श्वेताम्बर पीताम्बर, बाघाम्बर अंगे । स्वामीo ।
सनकादिक विजयादिक, भूतादिक संगे ॥ ॐ हर-३ महादेव ॥

ब्रम्हा विष्णु सदाशिव, जानत अविवेका । स्वामीo ।
प्रणवाक्षर के मध्ये ,ये तीनो एका ॥ ॐ हर-३ महादेव ॥

तीनों एक स्वरूपा, ह्रदय में धरना । स्वामीo ।
हर हर रटते ब्रह्मा, भव सागर तरना ॥ ॐ हर-३ महादेव ॥

पार्वती पर्वत में विराजे, शंकर कैलाशी । स्वामीo ।
आक धतूरा के भोजन, भस्मी में वासी ॥ ॐ हर-३ महादेव ॥

हाथों में कंगन कानों में कुण्डल, गाल मोतियन माला । स्वामीo ।
जटा में गंगा विराजे, ओढत मृग छाला ॥ ॐ हर-३ महादेव ॥

स्वामी जी की आरती, जो कोई नर गावे । स्वामीo ।
कहत शिवानन्द स्वामी, मन वांछित फल पावे ॥ ॐ हर-३ महादेव ॥